

तारीख हुकम

हुकम या कार्यवाही मय इनिशियल्स जज

नम्बर व तारीख अहकाम जो हुकम की तामील में जारी हुए

-13/24

पत्रावली पेश हुई। पक्षकारान उप0। बहस पत्रावली पर सुनी गयी पत्रावली का अवलोकन किया गया प्रार्थी द्वारा प्रार्थना पत्र इस कथन के साथ प्रस्तुत किया है कि अप्रार्थीगण ने विवादित भूमि को कृषि कार्य के स्थान पर अकृषि कार्य किया जा रहा है तथा प्रतिवादी द्वारा अकृषि कार्य कर शर्त भंग करने का कार्य किया है अतः वादग्रस्त भूमि को राजस्थान काश्तकारी अधिनियम की धारा 175-177 के अन्तर्गत सिवायचक घोषित कर प्रतिवादी को उक्त भूमि से बेदखल किया जावे। प्रतिवादी द्वारा जवाब दावा प्रस्तुत मुताबिक जमाबन्दी वर्तमान विवादित भूमि ग्राम इटावा तह0 पीपल्दा कोटा राज0 ख0न0 884 रकबा 0.525 हेक्टे0 , ख0न0 3125/884 रकबा 0.01 हेक्टे0 भूमि पूर्व में अप्रार्थी के खातेदारी की भूमि थी जिसपर वर्तमान में 90 ए की कार्यवाही की जाकर नगरपालिका इटावा जिला कोटा राज0 के खाते दर्ज की जा चुकी है । राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1958 की 90 -क और राजस्थान अमिधृति अधिनियम 1955 की धारा 63 के अधीन गैर कृषिक प्रयोजनो के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने अमिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए वाछित 90 -क की कार्यवाही हेतु नगरपालिका इटावा जिला कोटा राज0 में कार्यवाही पूर्ण होकर वाद में वर्णित आराजी वर्तमान में आवासीय कालोनी प्रयोजनार्थ अकृषि कार्य के लिए सम्परिवर्तित की जा चुकी है। प्रतिवादी ने अपने जवाब प्रार्थना पत्र के समर्थन में नकल जमाबन्दी प्रस्तुत की । पत्रावली में प्रस्तुत दस्तावेज के अवलोकन कसे प्रकट होता है कि विवादित भूमि 90 -क की कार्यवाही हेतु नगरपालिका इटावा जिला कोटा राज0 में कार्यवाही पूर्ण होकर वर्तमान में आवासीय कालोनी प्रयोजनार्थ अकृषि कार्य के लिए सम्परिवर्तित की जा चुकी है। इस कारण प्रार्थी द्वारा की गई उक्त कार्यवाही का कोई औचित्य नहीं है। उक्त कार्यवाही ड्रॉप फरमाई जावे।

हमने पत्रावली पर मौजूद दस्तावेजों पटवारी रिपोर्ट तथा अप्रार्थी द्वारा पेश दस्तावेजों का गहनता से अवलोकन व मनन किया जिससे यह प्रतीत होता है कि अप्रार्थी द्वारा नियमानुसार विधिवत समपरिवर्तन की कार्यवाही संक्षम प्राधिकारी के समक्ष की गई जिसके आधार पर संक्षम प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त वर्णित आदेशानुसार संपरिवर्तन किया गया जिसका आदेश अप्रार्थीगण के अधिवक्ता द्वारा पेश किया गया। ऐसी स्थिति में प्रार्थी के प्रार्थना पत्र को कोई औचित्य नहीं रह जाता तथा प्रार्थी का प्रा0 पत्र अस्वीकार किए जाने योग्य प्रतीत होता ह।

अतः प्रार्थी का प्रार्थना पत्र अस्वीकार किया जाकर खारिज किया जाता है पत्रावली फाँसल सुमार होकर दाखिल दफतर हो ।

उक्त निर्णय मेरे द्वारा आज दिनांक 02.09.2024 को लिखवाया जाकर सरे इजलास सुनाया गया

A